परमार, यादवराव देशमुख, वचनेश त्रिपाठी, भानुप्रताप शुक्ल आदि ने क्रमशः सम्पादन कार्य तथा सर्वश्री मनमोहन गुप्त, ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी, राधेश्याम कपूर, नारायण कृष्ण पावगी तथा बजरंग शरण तिवारी ने व्यवस्था कार्य सम्हाले। जिस समय स्वदेश दैनिक प्रारम्भ हुआ श्री नानाजी देशमुख संस्थान के प्रबन्ध निदेशक बनाये गये।

इन पत्रों में विभिन्न विषयों पर लिखे गये विद्वतापूर्ण सारगर्भित लेखों के अतिरिक्त पंडित जी ने 'सम्राट चन्द्रगुप्त' और 'जगद्गुरू शंकराचार्य' नामक वर्तमान परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में दो क्रान्तिकारी वैचारिक ग्रन्थ भी लिखे।

इस समस्त काल में पण्डित जी को न अपने शरीर की सुध थी, न कपड़ों की। फटे पुराने कपड़े, कहीं भी सो जाना, कुछ भी खा लेना। प्रारम्भिक काल में उन्हें कम्पोजिंग, बाइंडिंग और डिस्पैचिंग तक स्वयं करना पड़ा कभी-कभी तो दो पैसे की बचत के लिए पैदल ही स्टेशन से गाँव की ओर चल देते, पूरे माह में 10 रू. भी अपने पर खर्च न हों यह प्रयास रहता था उस अनासक्ति का जिसका नाम था पण्डित दीनदयाल उपाध्याय।

संघ पर प्रतिबन्ध

30 जनवरी सन् 1948 को महात्मा गांधी की निर्मम हत्या से उत्पन्न देशव्यापी सहानुभूति का लाभ उठाकर (प्रधान मंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू का इन्द्रासन, संघ की प्रतिदिन बढ़ती हुई प्रबल संगठित शक्ति के आगे जो बोलने लगा था यद्यपि संघ को सत्ता की कोई आकांक्षा नहीं थी।) पं. नेहरू ने उस हत्या से सम्बन्धित होने का झूठा आरोप लगाकर संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया और संघ को कुचलकर समूल नष्ट करने के लिए पूरे देश के लगभग एक लाख स्वयंसेवकों, संघ के सरसंघचालक परमपूज्य श्री गुरूजी तथा देश भर के संघ अधिकारियों को बन्दी बनाकर जेलों में बन्द करा दिया। संघ द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मन्दिरों, संघ कार्यालयों तथा राष्ट्रधर्म प्रकाशन के कार्यालय को सीलबन्द कर दिया गया।

10 फरवरी को पण्डित दीनदयाल जी तथा रामराथ भल्ला, लखनऊ के प्रचारक के साथ जिलाधीश के सम्मुख समर्पण करने के कारण बन्दी बनाकर जेल भेज दिये गये थे। संध के कार्यकर्ताओं के साथ हिन्दू महासभा के प्रमुख नेता भी पकड़कर जेल में बन्द कर दिये गये। लखनऊ जिला जेल में पण्डित जी लगभग पांच महिने जेल में रहे। पूरे समय उन्होंने केवल धोती, बनियान का प्रयोग किया। पण्डित जी की प्रेरणा से, प्रातः से सायं तक पूरे समय टाइमटेबल बनाकर सभी कार्यकर्ताओं के स्वास्थ्यवर्धन एवं मानसिक विकास के विशेष कार्यक्रम बनाये गये। संस्कृत की कक्षा भी आरम्भ की गई। भारत के नवनिर्मित संविधान पर भी